प्रकाशनार्थ

कार्ल मार्क्स पर सम्मेलन - दिन-1

पटना, 16 जून। एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) के तत्वावधान में पटना में शनिवार को **'कार्ल मार्क्स - जीवन, विचार, प्रभाव : द्विशतवार्षिकी पर एक आलोचनात्मक परीक्षण'** विषय पर आयोजित पांच-दिवसीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन के पहले दिन पॉल एम. स्वीजी स्मृति व्याख्यान देते हुए प्रोफेसर दीपांकर गुप्ता ने साम्यवादियों द्वारा राजनीतिक दलों के निर्माण की विडंबना को मुख्य रूप से सामने लाया। ''मार्क्स साम्यवादी घोषणापत्र में न तो साम्यवादियों द्वारा राजनीतिक दलों के निर्माण के पक्ष में थे और न ही उन्होंने उनके अपने तबकाई सिद्धांतों के निर्माण को स्वीकृति प्रदान की,'' श्री गुप्ता ने कहा।

श्रोताओं की ओर से आए एक प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रोफेसर गुप्ता ने कहा कि अपने विचरों को अंजाम देने के लिए हिंसा की अवधारणा न तो मार्क्स ने प्रख्यापित की न फ्रेडरिक एंजेल्स ने। मार्क्स ने यह भी कहा था कि महिलाओं को सामाजिक क्रांति में केंद्रीय भूमिका निभानी चाहिए। मार्क्स ने वस्तुतः सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं की अग्रणी भूमिका का सिद्धांत प्रतिपादित किया। उन्होंने बीते समय में मार्क्स के विचारों की गलत व्याख्या पर दुख प्रकट किया। विद्वानों द्वारा स्टालिन, माओ, चाउसेस्कू और अन्य साम्यवादी तानाशाहों के साथ मार्क्सवाद के स्वतःस्फूर्त जुड़ाव की प्रवृत्ति को इसका कारण बताते हुए प्रोफेसर गुप्ता ने बताया कि हन्ना आर्डेंट, मैक्स वेबर और मिल्टन फ्रीडमैन जैसे लोकप्रिय आलोचक अपनी आलोचनाओं से मार्क्सवाद को नुकसान पहुंचा रहे थे हालांकि उनकी आलोचनाओं का बड़ा हिस्सा कमजोर तथ्यों पर आधारित था।

सम्मेलन का आयोजन डॉ. पीयुषेंदु गुप्ता और राधा कृष्ण चौधरी की स्मृति में किया जा रहा है जो 1967 में कार्ल मार्क्स पर 150वीं जयंती के अवसर पर बेगूसराय में राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य आयोजकों में थे। सम्मेलन का उद्घाटन डॉ. पीयुषेंदु गुप्ता की पुत्रवधू और राधाकृष्ण चौधरी के पुत्र प्रणव कुमार चौधरी को अंगवस्त्र प्रदान करके सम्मानित करने के जरिए हुआ। आद्री की कोषाध्यक्ष डॉ. सुनीता लाल ने प्रशस्ति-पत्र का वाचन किया और बाद में इस अवसर पर प्रमुख वक्ताओं को स्मृति चिन्ह भेंट किया।

मुख्य व्याख्यान देते हुए लार्ड मेघनाद देसाई ने कहा कि मार्क्स के सिद्धांत समसामयिक जगत के लिए, खास कर वैश्वीकरण के संदर्भ में पूंजीवाद की भूमिका के मामले में महान सबक हैं। उन्होंने कहा कि 2008 के वित्तीय संकट के बाद से मार्क्सवाद को नवजीवन प्राप्त हुआ है।

ASIAN DEVELOPMENT RESEARCH INSTITUTE
BSIDC Colony, Off Boring-Patliputra Road, Patna - 800 013, Tel. : 0612-2575649, Fax : 0612-2577102
E-mail : adripatna@adriindia.org / adri_patna@hotmail.com, Website : www.adriindia.org

गौरतलब है कि विश्लेषकों ने इशारा किया कि व्यापक आर्थिक स्वतंत्रता और प्रभुत्वसंपन्न मध्यवर्ग का उदय अंतत: ऐसी स्थिति पैदा करेगा जो अधिक राजनीतिक आजादी की मांग करेगी जिसकी परिणति चीन में लोकतंत्र में होगी। लॉर्ड देसाई ने ध्यान दिलाया कि ऐसे परिणामों के बारे में मार्क्स ने अपने लेखन में पहले ही उल्लेख कर दिया था।

आरंभिक सत्र में आद्री के सदस्य सचिव डॉ. शैबाल गुप्ता ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि सम्मेलन में ''हमलोग मार्क्स को ही याद नहीं कर रहे हैं, 38 व्याख्यान मार्क्स को प्रभावित करने वाले या उनसे प्रभावित दार्शनिकों, अर्थशास्त्रियों, विद्वानों और राजनीतिक व्यक्तित्वों को समर्पित किए गए हैं।''

आद्री के निदेशक प्रोफेसर प्रभात पी. घोष ने कहा कि मार्क्स के विचार आज भी विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों का ध्यान इसलिए आकर्षित करते हैं कि मार्क्सवादी प्रविधि के अनेक तत्वों ने विश्लेषण को ऐसी शक्ति प्रदान की है जो मार्क्स के पहले मौजूद नहीं थी। आरंभिक सत्र की अध्यक्षता आद्री के अध्यक्ष प्रोफेसर अंजन मुखर्जी ने की।

कार्ल मार्क्स स्मारक व्याख्यान देते हुए जे.एन.यू के सेवानिवृत्त प्रोफेसर और दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दीपक नैयर ने वैश्वीकरण के ऐतिहासिक उद्भव के बारे में अपनी बातें रखीं। उन्होंने रेखांकित किया कि वैश्वीकरण बहुआयामी परिघटना था जो वस्तुओं और सेवाओं तथा पूंजी के प्रवाह तक ही सीमित नहीं था, इसका विस्तार विचारों, प्रौद्योगिकी और सूचनाओं के आदान-प्रदान तक भी रहा है। ऐतिहासिक रूप से वैश्वीकरण एक भंगुर प्रक्रिया रही है जिसमें समय-समय पर उतार-चढ़ाव आते रहे हैं।

वैश्वीकरण के लिए ऐसे वर्चस्व की जरूरत होती है जो विश्व व्यवस्था की सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित कर सके। अभी यह भूमिका संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा निभाई जा रही है। वर्ष 2008 के वैश्विक आर्थिक संकट के दौरान वैश्वीकरण को यूरोपीय देशों के साथ-साथ अमेरिका में भी बड़ा धक्का लगा है जहां डोनाल्ड ट्रंप का उभार दिखा है।

पांच-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के पहले दिन के एक प्रमुख वक्ता दक्षिण कोरिया के ग्योंगसांग राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के प्रोफेसर स्योंगजिन ज्योंग ने रजनी पाम दत्त स्मारक व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए दक्षिण कोरिया में 1970 से 2014 के बीच हुए पूंजीवादी विकास के संबंध में मार्क्सवादी विचार प्रस्तुत किया।

जे.एन.यू के पूर्व प्रोफसेर प्रो. सतीश जैन ने एडम स्मिथ स्मारक व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने 'मार्क्सवाद के मानकीय तत्व'' विषय पर अपने विचार रखे।

ऑस्ट्रेलिया के सनशाइन कोस्ट विश्वविद्यालय के वरिष्ठ व्याख्याता डॉ. शैनन ब्रिंकैट ने शापूरजी सकलातवाला स्मारक व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए 'प्राचीन भारतीय द्वंद्वात्मकता और मार्क्स' के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला।

(अंजनी कुमार वर्मा)

ASIAN DEVELOPMENT RESEARCH INSTITUTE
BSIDC Colony, Off Boring-Patliputra Road, Patna - 800 013, Tel. : 0612-2575649, Fax : 0612-2577102
E-mail : adripatna@adriindia.org / adri_patna@hotmail.com, Website : www.adriindia.org